### पक्षी क्यों छोड़े गए

बर्ड फ्लू के बारे में पिछले दिनों तुमने खूब सुना-पढ़ा होगा। यह फ्लू खासकर बत्तखों से फैलता है। चीन, मंगोलिया तथा रूस से हर साल हज़ारों प्रवासी पक्षी भारत आते हैं। इनमें से कई उड़ीसा की चिल्का झील में कुछ महीनों के लिए डेरा डाले रहते हैं। क्या ये पक्षी जिन रास्तों से आते-जाते-ठहरते हैं वहीं फ्लू फैलता है? इसका जवाब पाने के लिए चिल्का झील में जाल

# वे दो पक्षी आखिर कहाँ चले गए...

*पी. गंगईअमरण तमिलनाडु के रहने वाले हैं और उड़ीसा में बॉम्बे नैचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के साथ काम करते हैं। इन दिनों वे मध्यप्रदेश में घूम रहे हैं। उन्हें तलाश है उन दो पक्षियों की जिन्हें पिछले महीने उड़ीसा की चिल्का झील से उड़ाया गया है। वैसे उड़ाए तो ७० पक्षी गए थे पर पता चला कि इनमें से एक रायसेन ज़िले के बारना बाँध में डेरा डाले हुए था और दूसरा भोपाल की बड़ी झील में। बाकी पक्षी अपने-अपने ठिकाने पहुँच गए हैं। हमने गंगईअमरण से पूछा कि आपको कैसे मालूम चला कि वे इस तरफ आए हैं। उन्होंने इसकी पूरी कहानी बताई...*

बिछाकर 70 पक्षियों को पकड़ा गया। इसके बाद इन्हें खास किस्म के ट्रांसमीटर लगाए गए। इन ट्रांसमीटरों में एक बैटरी लगी है जो सौर ऊर्जा से चलती है। छोटे पक्षियों को 12-20 ग्राम का और बड़े पक्षियों को करीब 30-35 ग्राम वज़न का ट्रांसमीटर लगाया गया। पक्षियों की पीठ पर लगा यह उपकरण उन्हें उड़ने में या खाने-पीने में कोई रोड़े नहीं अटकाता है। हाँ, अगर इधर-उधर खिसक जाए तो ज़रूर दिक्कत हो जाती है। लगभग तीन साल तक काम करने वाला यह ट्रांसमीटर उन प्रजातियों वाली बत्तखों को लगाया गया जो पानी में डुबकी नहीं लगाती हैं। ट्रांसमीटरों से पक्षियों के ठिकाने के बारे पता चलता रहता है। सब पक्षियों का एक खास नम्बर होता है। किस वक्त कौन-से नम्बर का पक्षी कहाँ है, आते-जाते समय वह किन-किन जगहों पर रुका, किस रास्ते से आया-गया इसका पता लगाया जा सकता है। इससे यह भी मालूम किया जा सकता है कि जिन जगहों पर यह पक्षी ठहरा वहाँ उसके सम्पर्क में कौन-से अन्य पक्षी आए। ट्रांसमीटर लगे पक्षियों की जानकारी हमें सैटेलाइट से मिलती है।

### ये दो पक्षी भटक गए या...

यात्रा लम्बी हो तो पक्षी अकसर झुण्डों में रहते हैं। फिर इन दो पंछियों ने अलग रास्ता क्यों अपनाया होगा?

गंगईअमरण व लाड अंकल दोनों कहते हैं कि पक्षी आमतौर पर ऐसा तब करते हैं जब उन्हें कोई शारीरिक समस्या हो। कभी-कभी आवारगी के चलते या भटक जाने पर वे झुण्ड से अलग हो जाते हैं। पर, इसके अलावा कई दूसरे कारण भी हो सकते हैं।

फोटो: पी एम लाड

गंगइअमरण हमें मिले लाड अंकल के घर। शाम के सात बज रहे थे। वे दोनों बारना बाँध से उस पक्षी की तलाश करके घर पहुँचे ही थे। "क्या कमाल है टेक्नॉलॉजी का! 4-5 दिन पहले वह पक्षी जहाँ था आज हम उस जगह के बिलकुल आसपास थे।" हमें देखते ही लाड अंकल बोले। "वे मिले क्या?" हम अपनी उत्सुकता रोक न पाए।

"नहीं, जब तक हम बारना बाँध पहुँचे, वे

ट्रांसमीटर

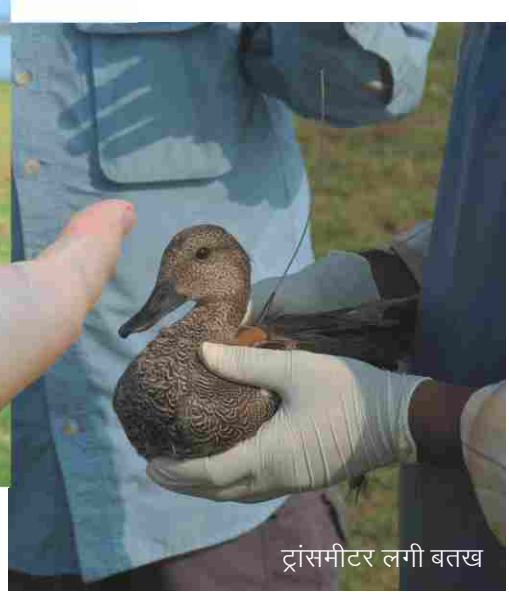
ट्रांसमीटर लगी बतख

वहाँ से जा चुके थे। भोपाल वाला भी नहीं मिला। अब पता चला है कि भाखड़ा बाँध और पंजाब के दूसरे बाँधों पर रुकते हुए वे आगे चले गए हैं। अब तक शायद अपने मूल स्थान पर पहुँच भी चुके होंगे। शायद हिमालय, शायद नेपाल या शायद साइबेरिया ही। और देखो, मैं अभी तक यहीं भोपाल में बैठा हूँ... उड़ीसा जाने वाली ट्रेन में रिज़र्वेशन के इन्तज़ार में।" गंगईअमरण बोले।

***एक रास्ता, एक समय***

प्रवासी पक्षी हज़ारों किलोमीटर लम्बा रास्ता याद रख पाते हैं। इतना ही नहीं लम्बा सफर तय कर वे हर साल एक ही जगह पर, लगभग एक ही समय पर पहुँच भी जाते हैं! इस बात ने तो पक्षी विशेषज्ञ सालिम अली को भी आश्चर्य में डाल दिया था। उनके घर में एक बगीचा था। इस बगीचे में हर साल 7 अक्टूबर को एक खंजन पक्षी आता था। लद्दाख से मुम्बई। मुम्बई ही नहीं, उनके बगीचे के किसी खास पेड़ पर। 6-7 साल तक वो उसी वक्त आती रही। और एक हम हैं कि कैलेण्डर न देखें तो पता ही न चले कि अक्टूबर की 5 तारीख है या 15।

मध्य एशिया, मंगोलिया, साइबेरिया, युरोप से हर साल सर्दियों में ये पक्षी भारत आते हैं। इस मौसम में वहाँ खाना-पीना कम हो जाता है इसलिए। गर्मियाँ होते ही वे अपने ठिकानों की ओर उड़ जाते हैं। वहाँ पहुँचकर अण्डे देते हैं, बच्चों को बड़ा करते हैं। और फिर सर्दियाँ शुरू होते ही बच्चों को लेकर भारत जैसे कम ठण्ड वाले देशों की ओर उड़ आते हैं। आना तो वे ज़रा रुकते-रुकाते करते हैं। पर जाते सपाटे से हैं। एक घण्टे में 100-150 किलोमीटर तक उड़ जाते हैं। गंगईअमरण ने हमें बताया।

प्रस्तुतिः पी गंगईअमरण एवं पी एम लाड


एकलव्य

का नया प्रकाशन

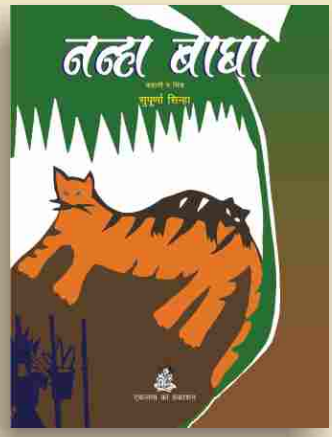


नन्हा बाघा

कहानी व चित्र
सुपूर्णा सिन्हा

नन्हा बाघा माँ के साथ रहता है। वह जंगल देखता। जंगल के जानवरों को देखता है। एक दिन जब माँ सो रही थी तो वह निकल गया जंगल में। उसने देखा.जानवर उसके साथ वैसा व्यवहार नहीं कर रहे थे जैसा किसी बाघ के साथ होता है। वह दुखी हो जाता है....पर आखिर में कुछ ऐसा होता है कि नन्हा बाघा खुशी के मारे उछल पड़ता है। सुन्दर कोलाजों से सजी यह किताब हिन्दी-अँग्रेज़ी दोनों में है।

मूल्यः 25 रुपए

सम्पर्क करें
एकलव्य/पिटारा
ई-10 शंकर नगर बीडीए कॉलोनी
शिवाजी नगर, भोपाल
pitara@eklavya.in